# फेंगशुई से पाएं सुख समृद्धि

❖ इस ब्रह्माण्ड में मौजूद सभी सजीव वस्तुएं ब्रह्माण्ड की ऊर्जा ची से संचालित एवं संबद्ध हैं। ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का जीवन में बेहतर उपयोग कैसे हो, यही फेंगशुई का आधार है।

❖ फेंगशुई परिस्थितियों के सुधार के उपाय बताती है।

❖ घर या दफ्तर को समस्याओं से मुक्त करना फेंगशुई का महत्वपूर्ण कार्य है।

❖ फेंगशुई पारिवारिक संबंधों में सुधार करती है।

❖ फेंगशुई के प्रयोग से व्यक्ति का स्वास्थ्य उत्तम, घर में संपन्नता और व्यवसाय में उन्नति होती है।

❖ फेंगशुई सृजन धर्मिता को उत्प्रेरित करती है।

❖ फेंगशुई के इस्तेमाल से व्यक्ति या वस्तु की कार्यक्षमता बढ़ जाती है।

❖ फेंगशुई अभिप्रेरणा में वृद्धि करती है। फेंगशुई के प्रयोग से तनाव में कमी आती है।

❖ फेंगशुई का उद्देश्य परिवार में शांति व सौहार्द्र की स्थापना है।

❖ फेंगशुई बच्चों का बौद्धिक व शैक्षणिक विकास करती है।

### फेंगशुई ऊर्जा 'ची'

❖ फेंगशुई में 'ची' (ऊर्जा) अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

❖ ची (ऊर्जा) कई प्रकार की होती है :- शेंग ची, ग्रोविंग ची, मृत ची, शा ची, फेंगशुई में 'ची' का अर्थ है - सांस-प्रश्वांस।

❖ ची ब्रह्माण्ड की जीवन-शक्ति है। यह वायु द्वारा प्रवाहित की जाती है। इसे जल की सहायता से समेकित रोका जा सकता है।

❖ 'शेंग ची' अच्छी ऊर्जा को कहते हैं। यह सामान्यत: सुख, सम्पन्नता, आनंद, अच्छी व सकारात्मक सोच, साहस, बल, ओजस्विता से संबद्ध है। यह सभी टेढ़ें-मेढ़े रास्तों पर होती है।

❖ फेंगशुई में 'शा ची' को घातक ची भी कहा जाता है। जब कोई ऊर्जा सीधी रेखा में स्थित मार्ग या पथ से आती है, तो उसमें बल उत्पन्न होता है। इसके कारण यह विध्वंसकारी ऊर्जा बन जाती है। नुकीले अस्त्र, टूटे हुए वृक्ष आदि शा-ची के उत्प्रेरक होते हैं।

❖ फेंगशुई में 'मृत ची' नकारात्मक ऊर्जा कहलाती है। इसके प्रभाव में व्यक्ति के मन में मृत्यु के विचार, उदासी, मलिनता, अवसाद ग्रस्तता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

❖ जो ची सजीव होती है और ऊर्जा का संचरण करती है, हितकारी ची कहलाती है।

❖ ऐसी कोई जगह जहां ची प्रवाहित नहीं हो रही हो, अथवा यह किसी स्थान पर एकत्रित होकर बाधित हो जाए, मृत ची कहलाती है।

❖ शा-ची एवं दूषित जल में एकत्रित एवं स्थिर होती है।

❖ ची शरीर और आत्मा को मिलाती है। यह व्यक्ति के जीवन के तौर-तरीके से जुड़ी है।

❖ फेंगशुई का मुख्य विषय वातावरण में विद्यमान ऊर्जाएं हैं। ऊर्जाओं का यही संतुलन ही किसी व्यक्ति के घर, दफ्तर आदि में खुशहाली, समृद्धि, उत्साह, सौहार्द्र और आशा का संचार करने वाला होता है।

### फेंगशुई में यिन और यांग ऊर्जा

❖ घर, दफ्तर अथवा हमारे आस-पास दो तरह की ऊर्जाएं मौजूद हैं- ये हैं यिन और यांग। यिन ऊर्जा नकारात्मक ऊर्जा को कहते हैं जबकि यांग ऊर्जा से सकारात्मक बोध होता है।

❖ हालांकि यिन और यांग ऊर्जाएं एक दूसरे के विरोधी गुणों वाली होती हैं। परन्तु प्रत्यक्ष रूप से ये एक दूसरे से परस्पर लड़ती नहीं हैं। बल्कि ये एक दूसरे की पूरक होती हैं।

❖ यिन और यांग प्रकृति की प्राथमिक स्तर की ऊजाएं हैं। ये ऊजाएं विश्व का संचालन करती हैं।

❖ यिन ऊर्जा चंद्रमा की प्रतीक है। यह काली, स्त्री रूपी तथा अचेतन है। इसको (--) चिन्ह से दर्शाया जाता है।

❖ यांग ऊर्जा सूर्य की प्रतीक है। यह कम श्वेत वर्णी, पुरुष रूपी तथा चेतन है। इसे (-) चिन्ह से दर्शाया जाता है।

❖ वातावरण का संतुलन बनाने में यिन और यांग का अस्तित्व होता है।

❖ यिन और यांग आपस में मिलकर एक चक्राकार बदलाव लाती हैं। जैसे घड़ी का पैंडुलम एक छोर से दूसरी छोर तक आकर वापस उसी जगह आता है।

❖ यिन और यांग ऊर्जाएं हर जगह पर बारी-बारी से दिखती हैं।

❖ टाओ नामक एक प्रक्रिया से यिन और यांग ऊर्जाएं एकत्रित होती हैं। इनके एकत्रित रूप को टाई-ची कहा जाता है। यह वैश्विक स्थित को दर्शाती है।

❖ यिन किसी भी वस्तु का अंतरंग(Inside) स्वरूप है तथा यांग व्यक्तित्व का वाह्य रूप है। यिन और यांग में संपूर्ण व्यक्तित्व झलकता है।

❖ फेंगशुई में किसी भी मकान, दुकान, ऑफिस, फैक्टरी, औद्योगिक संस्थान आदि में यिन और यांग ऊर्जाओं का स्तर संतुलित होना आवश्यक है। ये ऊर्जाएं संतुलित होंगी, तो वहां काम करने वाले अथवा रहने वाले व्यक्तियों पर सकारात्मक असर बढ़ जाता है। कर्मचारी- मालिक दोनों पक्षों में गुणात्मक सुधार आता है।

❖ यिन और यांग ऊर्जाएं हर प्रक्रिया को अपने परस्पर विरोधी भागव में रूपांतरित करती रहती हैं। इस प्रकार से एक श्रृंखलाबद्ध नियोजन होता है।

❖ यिन और यांग ऊर्जाएं केवल कम या ज्यादा की मात्रा में ही नहीं, बल्कि प्रभाव और अभाव अथवा Presence & absence के स्तर पर भी अपना असर दिखाती हैं।

❖ यिन और यांग ऊर्जाओं की अत्यधिक मात्रा में उपस्थिति अथवा इसकी कमी असंतुलन को जन्म देती है और यह न केवल भौगोलिक वातावरण के लिए ही नुकसानदेह है, अपितु पर्यावरण के लिए भी खतरा है। सरल शब्दों में कह सकते हैं कि जैसे अति सर्वत्र वर्जयेत है, उसी प्रकार से ऊर्जाओं की स्थिति भी है।

❖ यिन और यांग ऊर्जाओं का सिंद्धांत और वैद्यक शास्त्र में गहरा संबंध है।

❖ वैद्य शास्त्र में यिन और यांग के संतुलन से रोग ठीक होता है। जैसे-जैसे पेट की खराबी होने पर (यिन की स्थिति में) हम मुंह (यांग) खोलते हैं। मुंह के द्वारा पेट खाली कर रोग का निवारण होता है।

❖ जिस तत्व के प्रभाव से यिन-यांग का असंतुलन होता है, उस तत्व से संबंधित चिकित्सा का प्रयोग करना आवश्यक होता है।

❖ यिन ऊर्जा का अभाव यांग ऊर्जा के बढ़ाने का कारण बन जाता है। इसके फलस्वरूप शरीर में गर्मी का प्रकोप बढ़ जाता है। इसी प्रकार से यांग ऊर्जा का अभाव यिन ऊर्जा को बढ़ावा देकर आलस्य, निराशा आदि अवस्थाओं का कारक बनता है।

❖ यिन और यांग ऊर्जाएं विश्व के बदलावों को संचालित करती हैं। यह कार्य पांच तत्वों द्वारा किया जाता है, जिन्हें बु-स्टिंग कहा जाता है।

❖ यिन और यांग ऊर्जाएं अपने आप में ऐसी ऊर्जाएं हैं, जो एक दूसरे का निर्माण करती हैं।

❖ यिन-यांग एवं पांच तत्व वैश्विक व्याख्यात्मक सिद्धांत हैं।

❖ यिन और यांग ऊर्जाएं विश्व के समस्त विरोधाभासी तत्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

❖ यांग पौरुषत्व, सूर्य, गर्मी, जीन, प्रकाश, स्वर्ग, प्रभाव आदि सकारात्मक तत्वों का प्रतीक है।

❖ यिन स्त्रीत्व, चंद्रमा, पूर्णत्व, ठंडक, अंधकार, भौतिक विषय, समर्पण आदि नकारात्मक तत्वों से संबंधित है। जैसे किसी भी बात का अस्तित्व शाश्वत नहीं होता, वह बात अपने विरोधी तत्व के प्रारूप में कालानुवश रूपांतरित हो जाती है। अत: न सिर्फ ऊर्जा बल्कि भावनाओं और जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन बनाकर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

चीनी लोग पारंपरिक रूप से तीन प्रकार के भाग्यों पर विश्वास करते हैं।

1. स्वर्गिक भाग्य
2. सांसारिक भाग्य
3. मनुष्य का भाग्य

**स्वर्गिक भाग्य** :- यह वह होता है, जिसको किसी भी तरह बदला नहीं जा सकता। या कह सकते हैं कि यह मनुष्य के हाथ में नहीं होता।

**सांसारिक भाग्य** :- इसको फेंगशुई के माध्यम से सुधारा जा सकता है। यह मनुष्य के भाग्य को सहयोग देने में सक्षम होता है।

**मनुष्य का भाग्य** :- यह भाग्य आत्मविकास और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से पूर्ण करने में सहायता करता है।

❖ इस धरती में मौजूद पंच तत्वों में रंग, ऋतु उत्पादक और निष्पादक क्रम चलता रहता है।

❖ प्रकृति में सभी वस्तुओं का एक जीवन चक्र है।

❖ प्रारंभ में हरेक वस्तु का जन्म होता है।

❖ ऊपर की ओर फैली ऊर्जा जब अपना अधिकतम विस्तार ले चुकी होती है, तो इस ऊर्जा का पतन होना आरंभ हो जाता है।

❖ जल में प्रवाही ऊर्जा होती है।

❖ काष्ठ में ऊर्जा का ऊर्ध्वमुखी, आयामी बहाव होता है।

❖ अग्नि में सक्रिय, अनवरत ऊर्जा होती है।

❖ पृथ्वी में संग्रहणीय ऊर्जा होती है।

❖ धातु में अनुबंधित ऊर्जा होती है। ❑❑❑